2009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकण्डरी परीक्षा नियमित

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय वि. हिन्दी
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12/03/09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें — कोड: U-2001 सेट: B

केन्द्र क्रमांक की सील

561002

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार उत्तरपुस्तिका ली गई है :–

क :– संख्या शब्दों में X अंकों में

ख :– परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 05 में है।

ग :– उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर ए... सही लिखा है।

SECONDARY ... MADHYAPRADESH ... BHOPAL

757767

4. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	5	6	1	5	6	4	4

5. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :–

दो	नौ	पांच	छै	एक	पांच	छै	चार	[illegible]

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) Fatima

नाम Mrs. Tabassum Khan पद Lecture

पता/संस्था Govt. M.L.B. H.S. School Khandwa.

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका... जस्या स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया... पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः ...

हस्ताक्षर (परीक्षक) हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 9210247 दिनांक........ दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएें मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएें मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएें पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न 1) खाली स्थान भरो

(i) कृष्ण भक्ति शाखा

(ii) गणेश जी

(iii) कबीर

(iv) श्रीकृष्ण

(v) सूरदास

प्रश्न 2) सही विकल्प चुनो

(i) (ख) भय में

(ii) (घ) बसंती और बहू को

(iii) (ग) बिजनौर से

(iv) (ग) रेडीमेट अध्यक्ष

(v) (ख) बचपन के अनुभव

B S E M P

पृष्ठ के अंको का योग

4

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न 3 सत्य / असत्य लिखिये

(i) असत्य

(ii) असत्य

(iii) असत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

प्रश्न 4 सही जोड़ि

(i) कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है।	केशवदास
(ii) हमें अशिक्षित या असभ्य बताने वाले लोग हैं	पाश्चिमी देश
(iii) 'बढ़ सिपाही' कविता के रचयिता	विष्णुकान्त शास्त्री
(iv) झुकाने की सामर्थ्य है	वीर

(V) 'पल्लव वसना' कहा गया है | सूखी डाली

प्रश्न 5) एक शब्द में उत्तर

(i) डॉ. श्याम सुंदर दुबे

(ii) ब्रज भाषा

(iii) रेल की पटरी की खटपट

(iv) महादेवी वर्मा

(V) ग्वाले ने

प्रश्न 6 कबीर ने शब्द की महिमा बताते हुए कहा है कि हमे अपने मुख से बड़ी सावधानी पूर्वक शब्द निकालना चाहिये है। क्योंकि शब्द के न तो हाथ होते है और न तो पाँव फिर भी लोग अर्थ का अनर्थ निकाल लेते है।

शब्द कभी तो किसी के लिये औषधि का कार्य करते है तो कभी किसी के को घायल कर देते है। इसीलिये हमे बहुत सोच समझकर बोलना चाहिये।

BEMP

प्रश्न 9 आलोचना → आलोचना का अर्थ है कि "किसी चीज को भलि भांति देखना"। अर्थात किसी साहित्यिक रचना को पढकर उसपर अपने विचार व्यक्त करना व उसके गुण-दोषो की विवेचना करना ही आलोचना है। यह आधुनिक युग की देन है।

दो आलोचक

1.) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2.) महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न 11.) जब देवकी के गर्भ में भगवान श्रीकृष्ण का अवतरण हो चुका था तब देवकी को सबकुछ बड़ा ही अच्छा लगने लगा। उन्हे बांसुरी की मीठी टेर सुनाई दे रही थी एक जिसे सुनकर उन्हे ऐसा लग रहा था मानो वह किसी अत्यंत ही विशाल व मुक्त स्थान पर बैठी है। फिर एक पल के लिए उन्हे लगता की वे सागर की लहरो पर विराजमान है व लहर उन्हे झुला झुला रही है। वह अपने अंदर अत्यंत

E
S
E
M
P

ही आनंद का अनुभव कर रही थी

प्रश्न 10. गौतम के चले जाने के पश्चात यशोधरा विरह के ताप से पीड़ित थी। हिमालय की छाया में रह कर भी यशोधरा का ताप इसी इसलिये नहीं पिघल रहा था क्योंकि यशोधरा का ताप तो अन्तरिम था जबकि हिमालय तो बाह्य ताप को शांत करता है यशोधरा का ताप तो केवल गौतम से मिलने के पश्चात ही पिघलेगा।

प्रश्न 12. शांत रस जब किसी काव्य रचना को पढकर या सुनकर सहृदय के मन में निर्वेद नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है तो उस काव्य रचना में शांत रस होता है।

शांत रस का स्थायी भाव निर्वेद या शम है।

उदाहरण

(i) राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट।
अंतकाल पछतायेगा, जब प्राण जायेंगे छूट॥

(ii) भजमन चरण कमल अविनाशी।

BSEMP

8 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 8 के अंक = कुल अंक

प्रश्न (13.) (अ) वाक्य में प्रयोग

आँखो का तारा → राम, शांतिप्रिया का इकलौता लड़का है, इसीलिये वह उसकी आँखो का तारा है।

अंधे की लाठी — वृद्ध रामू चाचा के लिये तो उनका भतीजा श्याम ही अंधे की लाठी है।

(ब.) बुंदेली — ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना आदि।

मालवी — इंदौर, देवास, रतलाम मन्दसौर आदि।

प्रश्न (14.) साहित्यिक परिचय

आचार्य राम चन्द्र शुक्ल

दो रचनाएँ — चिन्तामणि, हिन्दी साहित्य का इतिहास

भाषा शैली — आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भाषा संस्कृतनिष्ठ

B S N P

पृष्ठ के अंकों का योग

9

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 9 के अंक = कुल अंक

है। इनकी भाषा परिष्कृत है भाषा में तत्सम शब्दों का बाहुल्य है किंतु भाषा में ~~तद्भव~~ तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया है कहीं-कहीं इन्होंने ~~इन~~ अपनी भाषा में उर्दू, फारसी के शब्दों का भी सम्मिश्रण किया है किंतु ~~और~~ फिर भी इनकी भाषा क्लिष्ट या दुरूह नहीं हुई है। इन्होंने खड़ी बोली में रचनाएँ लिखी है। कौन सा शब्द कहां अधिक चोट करेगा इसका इन्हे पूर्ण ज्ञान था। इनका एक एक शब्द मोती में माला की तरह सुगठित है।

इन्होंने प्रायः अपने निबंध विचारात्मक शैली में लिखे है कहीं कहीं इन्होंने भावात्मक शैली का भी उपयोग किया है। इन्होंने कई आलोचनाएँ भी लिखी है ~~इनकी~~ रचनाओं में कहीं कहीं हास्य का पुट देखने को मिलती है।

साहित्य में स्थान हिन्दी साहित्य में इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से एक अलग ही छाप छोड़ी है। इन्हे अपनी रचना चिंतामणि के लिये पुरस्कृत भी किया गया है। ये साहित्य रूप वनस्थली के ऐसे फूल है जिनकी सुगंध चारों ओर बिखर रही है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 10 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

प्रश्न 15) कवि परिचय

सूरदास

दो रचनाएँ सूर सागर, साहित्य लहरी

भावपक्ष सूरदास भक्तिकाल के श्रीकृष्ण भक्ति शाखा के कवि है। इन्ही की ~~अधि~~ अधिकांश रचनाएँ श्रीकृष्ण को ~~आराध्य~~ आराध्य मानकर की गई है इन्होने अपना काव्य ब्रज व अवधी भाषा मे लिखा है इनकी रचनाओ मे दास्य भाव व भक्ति भाव देखने को मिलता है।

कलापक्ष सूरदास जी की अधिकतर रचनाओ मे वात्सल्य रस, श्रृंगार रस व शांत रस देखने को मिलता है। अनुप्रास अलंकार इनको प्रिय है। यद्यपि इन्होने रूपक उपमा श्लेष्मा अलंकारो का भी ~~भलिभांति~~ भलीभाँति प्रयोग किया है इनकी रचनाओ के प्रमुख छंद दोहा, कुण्डलियाँ है। इनकी रचनाओ मे प्रसाद गुण व माधुर्य गुण झलकता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 11 के अंक = कुल अंक

साहित्य में स्थान   सूरदास जी वात्सल्य रस के कुशल चितेरे है।
वात्सल्य रस का जैसा वर्णन इन्होने किया है वैसा कहीं और देखने को नही मिलता है इसीलिये तो इन्हे सूर्य के समान कहा गया है।

"सूर सूर, तुलसी ससि, उडुगन केशवदास।"

प्रश्न 16. संदर्भ, प्रसंग व्याख्या।

ब अलल प्रकाश   बताइ

संदर्भ प्रस्तुत अवतरण पाठ "तिमिर गेह में किरण आचरण" से लिया गया है। जिसके लेखक है डॉ. श्याम सुंदर दुबे।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश में लेखक मानव जीवन के प्रकाश रूपी गुणो के बारे में बता रहा है।

व्याख्या - लेखक के अनुसार दीपक, बिजली के लट्टू तो केवल बाह्य प्रकाश फैलाते है किंतु वास्तविक प्रकाश तो हमे स्वयं हमारे जीवन में छिपा में वह प्रकाश है। मानव की सृजनशीलता का प्रकाश। मनुष्य

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

का यदि आचरण व्यवहार, अच्छा हो
यदि वह परिश्रमी हो यदि वह कोमल
हृदय का हो तो वह अपने चारो ओर
प्रकाश रूपी गुण बिखेर देता है इन सब
गुणो की सहायता से तो हम खुशियो व
प्रेम, उल्लास के झरने बना सकते है
जीवन का कण कण, क्षण क्षण उजियारे से
भरपूर बना सकते है

विशेष - खड़ी बोली
संस्कृत निष्ठ भाषा
ललित शैली

प्रश्न 17.) पद्यांश की व्याख्या

का दूक दूक बसावो मा

संदर्भ प्रस्तुत पद्यांश "उद्धव प्रसंग" से
लिया गया है जिसके कवि "केशवदास"
है

प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश मे गोपियो द्वारा
उद्धव के निर्गुण ज्ञान का विरोध
किया गया है

13

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 13 के अंक = कुल अंक

भावार्थ → केशवदास जी के अनुसार जब श्रीकृष्ण के मित्र उद्धव निर्गुण ज्ञान की शिक्षा गोपियों को देते हैं तो गोपियां कहती हैं कि हे उद्धव हमारा मन बहुत ही कोमल है व दर्पण के समान है आप अपने पत्थर से भी कठोर वचनों को हमारे सामने मत बोलिए अन्यथा हमारा मन रूपी दर्पण टूट जायेगा। पहले ही हमारे मन में एक श्रीकृष्ण बसा है जिसने हमें कहीं का नहीं छोड़ा अब आपके वचनों से हमारा दर्पण मन टूट जायेगा जिससे और श्रीकृष्ण हमारे मन में बस जायेंगे जिससे हमारी विरह पीड़ा और बढ़ जायेगी।

काव्य सौन्दर्य - वियोग श्रृंगार रस
ब्रज भाषा
विरोधाभास अलंकार (एक मन मोहन — अतमो ना) में
माधुर्य गुण

प्रश्न 11. ध्वनि विस्तारक यंत्र पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु कलेक्टर को पत्र

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

प्रति,

जिला कलेक्टर महोदय,

खंडवा म.प्र.

विषय ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर प्रतिबंध लगाने हेतु

महोदय,

नम्र निवेदन है कि आज से एक साप्ताह सप्ताह पश्चात छात्रो की वार्षिक परीक्षा प्रारंभ होने वाली है। जिससे छात्र अपनी तैयारियो मे मग्न है किंतु मोहल्ले के कुछ शरारती तत्व देर रात तक ध्वनि विस्तारक यंत्रो का उपयोग करते है। जो कि हमारी पढाई मे बाधा पहुंचा रहे है।

अतः नम्र निवेदन है कि ~~शीघ्रातिशीघ्र~~ शीघ्रातिशीघ्र आप इन ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर प्रतिबंध लगाने का कष्ट करे।

धन्यवाद।

दिनांक 12/03/09

प्रार्थी

समस्त छात्रगण

जिला खंडवा

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 15 के अंक = कुल अंक

प्रश्न 7.) फूल और मालिन दोनो ही बहुत कोमल है मधुवर्षण करते हो यदि फूल को हम तोड़गे तो वह मुरझा जायेगा। और मालिन को भी कष्ट होगा फूल और मालिन को कभी न कभी नष्ट होना ही है और इस धरती आने वाले प्रत्येक जीव को किसी न किसी दिन तो नष्ट होना ही है अतः हमे किसी को कष्ट नही पहुँचाना चाहिये।

प्रश्न 8. प्रयोग वादी कविता प्रयोगवादी कविता का प्रारंभ अज्ञेय की ~~चार~~ रचना तारसप्तक के प्रकाशन मे प्रारंभ हुआ

विशेषताएँ →

1.) नवीन बिम्बो व उपमानो का प्रयोग प्रयोगवादी कविता में कवियो ने नवीनो बिम्बो व उपमानो का प्रयोग किया।

2) बौद्धिकता की प्रधानता इस वाद में कल्पना के स्थान पर बौद्धिकता को ~~स्थान~~ कवियो ने अपनी रचनाओ में स्थान दिया।

3) अश्लीलता का चित्रण इस वाद की रचनाओ में अश्लीलता देखने को मिलती है

B S E M P

पृष्ठ 16 के अंक | कुल अंक

4) सरल, सहज एवं मुक्त भाषा इस युग की ~~भाव~~ यथार्थ का चित्रण कविताओ में यथार्थ का चित्रण सहज सरल भाषा में किया, व्यंग्य का पुट देखने को मिलता है

प्रश्न (२०) निबंध

प्रदूषण : कारण और निदान

1) प्रस्तावना
2) प्रदूषण का अर्थ
3) प्रदूषण के प्रकार व कारण
4) निदान
5) उपसंहार

प्रस्तावना "

गंगा नदी मैली हो गई है गलियो से बदबू आ रही है। वायु मे विषैली गैसे, धूल व धुआ घुल चुकी है वातावरण विषाक्त हो गया और इन सब हालातो मे मानव अपना गुजर बसर कैसे करे? मनुष्य तो मनुष्य पशु का भी जीना दूभर हो गया है। इसी को देखते हुए किसी ने सत्य ही कहा है

BSEMP

~~दूषित वायु, दूषित जल कैसे कैसे हो जीवन~~

दूषित वायु दूषित जल,
कैसे हो जीवन मंगल।
शुद्ध वायु, शुद्ध जल,
कैसे हो जीवन सफल॥

प्रदूषण का अर्थ – प्रदूषण का अर्थ है दूषित करना। जब हमारे वायु ~~मंडल~~ मंडल मे, जल मे, आदि में कुछ अवांछनीय हानिकारक तत्व प्रवेश करते है जो हमे ~~नि~~ नुकसान पहुचाते है तो इसे ही प्रदूषण कहते है।

मानव का जन्म प्रकृति की सुरम्य गोद में हुआ उसने प्रारंभ से ही यह समझ लिया की प्रकृति के बिना इसका कोई अस्तित्व नही इसलिये वह इन्हे पूजता रहा मनाता रहा किंतु वर्तमान का मनुष्य यह सब भूल चुका है वह प्रकृति को अद्भुत ~~नुकसान~~ नुकसान पहुचा रहा है जिसके कारण आज वायु मंडल इतना प्रदूषित है।

प्रदूषण के प्रकार व कारण – सामान्यत प्रदूषण चार प्रकार का होता है। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण

BSEMP

ध्वनि प्रदूषण। प्रदूषण के और भी प्रकार होते हैं जैसे ध्वनि रेडियो धर्मी प्रदूषण आदि।

जल प्रदूषण।

आज जल प्रदूषण हमारे देश की ही नहीं अपितु एक अन्तर्राष्ट्रीय ज्वलंत समस्याओं में से एक है। कारखानो से आने वाला कचरा सीधे नदियो में डाला जा रहा है मनुष्य अपने पशुओ, ढोर, आदि को नदियो मे नहलाते है। अधिकांश नदियो के घाट पर ही कपड़े धोती है। गणेश महोत्सव, दुर्गा पूजा के अवसरो पर मूर्तियों को नदियो मे ही विसर्जित किया जाता है। उन पर चढ़ाई जाने वाली फूल मालाये नदियो मे डाली जाती है। भारत में जितनी नदिया धार्मिक महत्व रखती है उन सभी नदियो मे सबसे ज्यादा गंदगी पायी गई है। वर्षा के पानी को भी संरक्षित नही किया जाता जिससे जल स्तर और भी घटता जा रहा है।

वायु प्रदूषण - वायु प्रदूषण भी आज एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है। कारखानो से निकलने वाला धुँआ वायु मंडल को प्रदूषित कर रहा है। दिन पर दिन होते आतंकी हमलो में प्रयुक्त बमो की वजह से भी वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। युद्ध की आशंका की ~~एक~~ वजह से

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

अधिकांश देश अपनी रक्षा के लिये मिसाइलें, तोपें बम बना रहा हो और इनका परीक्षण कर रहा हो जिससे वायु तो दूषित हो ही रही है साथ साथ उन देशों का पैसा भी नष्ट हो रहा है वायु प्रदूषण के कारण ही आज पृथ्वी को हानिकारक पराबैंगनी विकिरणों से बचाने वाली ओजोन परत नष्ट होती जा रही है। यह छिद्र अंटार्कटिका महाद्वीप के ऊपर देखा गया। इसका मुख्य कारण वायुमण्डल में उपस्थित क्लोरोफ्लोरो कार्बन है। यह ओजोन से क्रिया कर इसे ऑक्सीजन में परिवर्तित कर देती है जिससे ओजोन परत नष्ट हो जाती है।

ध्वनि प्रदूषण → ध्वनि प्रदूषण पहले कुछ स्थान केवल महानगरों तक ही सीमित था किंतु आज यह छोटे-छोटे शहरों में भी अपने पांव पसार चुका है। ध्वनि विस्तारक ~~यंत्र~~ यंत्र, वाहनों का बढ़ता प्रयोग आदि तत्व इसके ~~सब~~ कारण हैं। ध्वनि प्रदूषण से मानव मस्तिष्क में तनाव बढ़ता है। सिरदर्द इसी का कारण है। अधिक ध्वनि प्रदूषण या शोर से मनुष्य बहरा हो सकता है।

मृदा प्रदूषण → आज देश का हर किसान अपने खेत से अधिक से अधिक फसल

प्राप्त करना चाहता है जिसके लिये वह अनेक ~~अब~~ उर्वरको व कीटनाशको का उपयोग करता है ~~किंतु~~ ये फसलो को सुरक्षित रखते है किंतु वर्षा के जल के साथ ~~ब~~ जो नदी मे पहुँच जाते है व जड़ो के माध्यम से फसलो, फलो मे पहुँच जाते है।

डी.डी.टी. एक शक्तिशाली कीटनाशक है इसका प्रयोग इतना अधिक बढ़ चुका है कि ये हमारी खाद्य श्रृंखला मे भी पहुँच चुका है एक शोध के दौरान यह बात सामने आई की माँ के ~~[illegible]~~ दूध मे भी डी.डी.टी की कुछ मात्रा पायी गई।

निदान – हर समस्या का समाधान होता है हमारे पास भी इस ज्वलंत समस्या का समाधान है किंतु हमें आवश्यकता है कि हम इस प्रकृति को प्रदूषण रहित रखने के लिए हर संभव प्रयास करे। हमें अधिक पेड़ पौधे लगाने चाहिये। जिससे वातावरण में शुद्ध वायु की अधिकता हो ये पेड़ पौधे न केवल वायु वातावरण शुद्ध रखते है अपितु वर्षा के बादलो को भी आकर्षित करते है इसीलिये कहा गया है

जहाँ है हरियाली, वहाँ है खुशहाली।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

सौर ऊर्जा का उपयोग करना चाहिये, धुएँ रहित वाहनों का प्रयोग करना चाहिये। कारखानों से निकलने वाले पानी को फिल्टर करके नदियों में बहाना चाहिये। रासायनिक कीटनाशकों व उर्वरकों का उपयोग नही करना चाहिये अपितु इनके स्थान पर खाद का उपयोग करना चाहिये। ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर प्रतिबंध लगाना चाहिये सरकार ने भी इस उद्देश्य से कई कानून बनाये है इस विषय में अमेरिकी राष्ट्रपति ने ओजोन परत को नुकसान पहुँचाने वाले क्लोरो फ्लोरो कार्बन युक्त पदार्थो पर प्रतिबंध लगा दिया था।

उपसंहार — प्रदूषण आज पूरे विश्व के लिये घातक साबित हो चुका है। इसे कम करने व नष्ट करने के लिये किसी एक व्यक्ति को या किसी एक देश को नही अपितु पूरे विश्व को आगे आना चाहिये। वरना हमारी अगली पीढी हमें हमेशा कोसती ही रहेगी। यदि हमने समय रहते इसे खत्म नही किया तो ये हमें अवश्य खत्म कर देगा।

प्रश्न 18.) अपठित गद्यांश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग [ ]

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

(i) शीर्षक → "धर्म-पालन"

(ii) सारांश → धर्म के पालन मे कई कठिनाई आती है। मनुष्य की आत्मा हमेशा सही सलाह व विवेक देती है वही दूसरी ओर आलस्य व स्वार्थी पन होता है हमे ~~आत्मा~~ आत्मा की बात मानकर धर्म का पालन करना चाहिये अन्यथा हम कहीं के नही रहेगे।

(iii) धर्म पालन के मार्ग मे बाधाएँ

(1) चित्त की चंचलता

2. उद्देश्य की अस्थिरता

(3) मन की निर्बलता

BSEMP

5

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग